

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१४/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा सतगुरु जी को नमस्ते। परमात्मा सतगुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी अपने लाइट को देखें... सभी अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित होकर अपने आत्मा की, मूलस्वरूप की, सत्य स्वरूप की लाइट को स्पष्टता से देखने का अभ्यास करें... कुछ क्षणों के लिए सभी अपनी लाइट को गहराई से देखें और साथ ही साथ उसका अनुभव करें...

क्या सभी ने अपने लाइट का अनुभव किया? जब भी वाणी सुनने को बैठते हो, जब भी वाणी में मूलस्वरूप का अभ्यास दिया जाता है, तो कोशिश करना उस समय आप आपके मूलस्वरूप में, सत्य स्वरूप में संपूर्ण अंतर्मुखी होकर अपने स्वरूप का अनुभव करें।

सभी अपने लाइट को अपने ब्रेन में फैलाएं... देखिए, आप आत्मा की लाइट आपके मस्तिष्क में फैल रही है... साथ ही साथ यह भी देखें, जैसे ही आत्मा की लाइट मस्तिष्क में फैल रही है, मस्तिष्क के अंदर की नेगेटिव ऊर्जा, नकारात्मक ऊर्जा मुक्त हो रही है...

सारे दिन भर में आपको जितना समय पॉसिबल होगा, तो जरूर आप आत्मा की लाइट को आपके मस्तिष्क में फैलाते रहना। दिन भर के कर्मों में आते, व्यवहार में आते, किसी के संबंध-संपर्क में आते, कहां से कुछ दृश्य देखे, फोन देखा, टीवी देखा, कहां से भी आपके नैनों द्वारा बाहरी दुनिया के दृश्य देखे, हर प्रकार की, हर किसी की ऊर्जा आपके ब्रेन के अंदर स्टोर हो जाती है। इसलिए जब-जब आत्मा से लाइट आप आपके ब्रेन को देते जाएंगे, आपको लाइट अनुभव होगा, आपको हल्कापन महसूस होगा। क्योंकि आत्मा की लाइट हर प्रकार की नेगेटिव ऊर्जा को, नेगेटिव ब्लॉकेजेस को मुक्त करती है और वहां

पर हर एक सेल में आत्मा की लाइट, आत्मा की ऊर्जा भरती जाती है। इसलिए सारे दिन भर में जब-जब आप किसी कर्म से विश्राम लेते हो, उस समय कुछ सेकंड के लिए या कुछ मिनटों के लिए, आप आत्मा की लाइट को पूरे मस्तिष्क में फैलाना, फिर आपको रिफ्रेशमेंट आएगी। उसी प्रकार से जब-जब आप कर्मों से शरीर को कुछ सेकंड के लिए बिठाते हो, विश्राम दिलाते हो, उस समय आत्मा से लाइट पूरे शरीर में भी फैलाना। जो भी थकान की ऊर्जा होगी या किसी भी प्रकार की नेगेटिव, नकारात्मक ऊर्जा शरीर के ओरा में आयी होगी, वह सारी मुक्त हो जाएगी, आत्मा की लाइट से। जब भी आपको लगे कि थोड़ा रिफ्रेशमेंट चाहिए, उस समय आत्मा की लाइट को आपके ब्रेन में और सारे शरीर में फैलाना।

कभी-कभी आप बाहरी वस्तुओं का, पदार्थों का आधार लेते हो आपके शरीर को रिफ्रेश करने के लिए; जैसे कोई चाय लेते हैं, कॉफी लेते हैं। यह क्या हुआ? यह आपने चाय के माध्यम से एक ऊर्जा को आपके शरीर में लिया, तो आपके शरीर के अंदर की ऊर्जा चेंज हुई। इसलिए आपको लगा कि चाय पीने से रिफ्रेशमेंट आ जाता है, कॉफी पीने से थकान उड़ जाती है, नींद उड़ जाती है। आप बाहर से किसी भी रूप से, पदार्थ से, अन्न से, पानी से आपके शरीर को जो-जो दिलाते हो, वह सब ऊर्जा है। इसलिए कभी-कभी किसी को कोई अन्न शरीर को देने के बाद शरीर में एक आलस आता है, वह भी एक ऊर्जा है। जब-जब शरीर की जितनी जरूरत है, उससे ज्यादा शरीर को देने से भी, आलस के रूप में ऊर्जा का निर्माण हो जाता है। इसलिए सदैव ध्यान में रखना — आप शरीर को अन्न या पानी नहीं खिलाते-पिलाते हो, बल्कि आप शरीर को ऊर्जा देते हो ताकि आत्मा उस शरीर को लेकर कर्म कर सके।

हर कोई अपनी जो-जो शरीर की जितनी जरूरतें हैं, उस अनुसार उतनी ऊर्जा शरीर को चलाने के लिए अवश्य दे। पर साथ में एक और महत्वपूर्ण बात है जो कि आप आत्मा, जो आप आत्मा के अंदर पांच तत्वों की ऊर्जा है, जो पांच तत्वों के ऊर्जा की शक्तियां हैं, उन सभी को आप आत्मा मूलस्वरूप में रहकर जागृत कर सकते हो और इन पांच तत्वों की ऊर्जा जो आत्मा के अंदर मौजूद है, वही पांच तत्व शरीर को ऊर्जा दिला सकते हैं, शरीर को वह चला सकते हैं। वह मास्टरी आने के लिए, सबसे पहले आप आत्मा को

आपके मूलस्वरूप का अभ्यास करना जरूरी है। जितना-जितना आप आत्मा आपके लाइट के स्वरूप में रहते जाओगे, उतना-उतना आपके पांच तत्व जागृत हो जाएंगे और यही तत्व आपके शरीर को ऊर्जा देते रहेंगे, शरीर को चलाते रहेंगे। उससे पहले मूलस्वरूप का अभ्यास जरूरी है।

हर कोई चेक करे कि आपका शरीर कितने समय तक, बिना शरीर को अन्न दिए चल सकता है, बिना शरीर को पानी दिए चल सकता है? हर कोई चेक करे। क्योंकि जो ऊर्जा आप आत्मा आपके पांच तत्वों की ऊर्जाओं से क्रिएट कर सकती है, वही ऊर्जा आप अन्न और पानी से बाहर से लेते हो। हर कोई अपनी चेकिंग करें कि कभी-कभी कोई भक्ति मार्ग में व्रत-उपवास करते हैं, उस समय पूरा दिन वह शरीर को बिना खिलाए, बिना पानी पिलाए कर्मों में आते हैं। शरीर चल सकता है आत्मा की ऊर्जा से। पर उससे पहले, आप आत्मा का भी दृढ़ संकल्प होना चाहिए कि आप आपके शरीर को बाहरी जो भी पदार्थ हैं, उनसे तो चलाएंगे ही, पर कम से कम उन पदार्थों का आधार लेंगे। अगर आपका दिल का संकल्प है कि आपकी आत्मा आपके शरीर को अच्छे से चलाए, तो आपके सभी पांचों तत्वों की ऊर्जा आपके शरीर को चला पाएगी। पर अगर कहां पर आप ही के मायावी अस्तित्व के विचार होंगे कि, “ऐसे कैसे शरीर बिना अन्न के, बिना पानी के चल सकता है? शरीर को तो बीच-बीच में देना चाहिए, तभी तो शरीर स्वस्थ रहेगा, तंदुरुस्त रहेगा” — यह सारे विचार आपके मायावी अस्तित्व के हैं। जब तक आपके ऊपर, आप आत्मा की आपके शरीर के ऊपर कंट्रोल नहीं आया है, तब तक जितनी जरूरत है, उतना अन्न-पानी शरीर को अवश्य दें। पर साथ में कोशिश करें कि कम से कम अन्न और पानी के आधार से हम शरीर को चला सकें। आप शरीर को खींचना नहीं; इसके लिए थोड़ा समय लगेगा आप आत्मा की आपके शरीर के ऊपर कंट्रोल आने में। पर आपका दिल का दृढ़ संकल्प, आपके पांचों तत्वों को जागृत रखकर शरीर को चला पाएगा। धीरे-धीरे यह अवश्य हो पाएगा।

हर कोई आत्मा अपने दिल के दृढ़ संकल्प से, उसको अपने अंदर जो-जो परिवर्तन करना है, वो कर सकती है। आत्मा के पास विराट ताकत है, पर हर कोई चेक करे कि आपको कहां-कहां परिवर्तन

करना है। परिवर्तन की प्रक्रिया में आपके मायावी अस्तित्व विचार चलाएंगे, इमोशन के रूप में आएंगे और वो पूरा कोशिश करेंगे कि आप आपकी परिवर्तन की यात्रा नहीं कर सकें। पर आप आत्मा को दृढ़ संकल्प रखते हुए, आपको आपके अंदर जो-जो परिवर्तन करना है, उस हर बात के लिए आप आपका काम करते रहना।

सभी आत्माएं सदा ध्यान में रखें — अंत तक आपके अंदर कुछ ना कुछ मायावी अस्तित्व रहेंगे, पर उनके कारण कोई भी अपनी परिवर्तन की यात्रा को बंद नहीं करना। संगम युग में आप आत्मा को ही आपके परिवर्तन की यात्रा करनी है। बस इस यात्रा में आपको सदैव सजग रहना है कि आपके परिवर्तन की प्रक्रिया में, कोई मायावी अस्तित्व आपके मन में विचार तो नहीं दिला रहे — इमोशन के रूप में हो या उदास, नाराजी के रूप में हो या हताश होने के रूप में हो; जैसे कोई-कोई कहते हैं, “हम कितना करें पर हो नहीं पा रहा है, हम थक गए हैं” — यह भी मायावी अस्तित्व के ही विचार हैं। बस इस परिवर्तन की यात्रा में इन सब मायाओं से आप आत्मा सावधान रहें। आपका काम है आपके अंदर की एक-एक कमी को निकालना। निकालने की प्रक्रिया में जो कुछ भी आती जाएगी परिस्थितियां, उनको स्थिर होके सामना करना, उनको प्रैक्टिकली समझना। हर किसी के जीवन में जो-जो परिस्थितियां आती हैं, वह हर एक परिस्थिति उनको उनके परिवर्तन की दिशा में ही लेके जाती है; पर हर कोई उसे उस दृष्टिकोण से देखे। हर कोई हर परिस्थिति को यही समझे कि, “इसमें मेरा कल्याण हो रहा है। अच्छा हुआ यह बात सामने आयी, पदम गुना शुक्रिया परमात्मा का।” हर परिस्थिति को आने के बाद दिल से परमात्मा का शुक्रिया करना और हर परिस्थिति से सीखते जाना कि, “यह परिस्थिति मेरे अंदर अभी क्या परिवर्तन के लिए सामने आयी है?” आप उसे पहचान लेना और आप उस पर आपका प्रयास करते रहना।

हर दिन आपके सामने नई-नई बातें आती जाएगी — जो पुरानी हैं, पर सामने आएगी; और हर बात को आपको दिल से स्वीकार करके उस परिस्थिति का शुक्रिया करना, परमात्मा का शुक्रिया करना। ऐसे चलते रहने से आप हर दिन आप आत्मा की स्थिति को ऊपर, उंचा उठाते जाएंगे। आप यह नहीं देखो

कि आप कितने अच्छे हो, आप यह नहीं सोचो, “आपके अंदर तो यह-यह बातें अच्छी हैं, फिर भी हमारे अंदर इतनी कमियां कैसे रही? हम तो इन बातों में अच्छे हैं।” परिस्थिति आने पर, खुद की अच्छाई का विचार चलाने वाली भी माया है। परिस्थिति में स्थिर होके, “अभी मुझे क्या करना है?” — यह आत्मा की सोच है।

इसलिए हर दिन परिस्थिति आनी ही है आपको आगे बढ़ाने के लिए, आप आत्मा को मजबूत बनाने के लिए। इसलिए हर दिन का सुबह ही, आंख खुलते ही शुक्रिया करना — “आज का दिन परमात्मा की कृपा से प्राप्त हुआ है परिवर्तन के लिए।” जब दिल से परमात्मा का शुक्रिया करेंगे और पूरे दिन का भी शुक्रिया करेंगे, उस दिन आप देखना आपके अंदर किन-किन बातों में, किन-किन संस्कारों में परिवर्तन आ रहा है; क्योंकि दिन की शुरुआत ही आपने शुक्रिया से शुरू की, आपने आपके परिवर्तन के लिए परिस्थितियों को आह्वान किया शुक्रिया करके।

जिनके जीवन में कठिनाइयां, संघर्ष नहीं होता, समझ जाना उनकी जीवन वहां पर ही स्थित है, वो आगे नहीं बढ़ पा रहे; भल उनको लग रहा है कि हमारा सब ठीक-ठाक चल रहा है। पर परिस्थिति आना माना आपकी स्थिति को और उंचा उठाने के लिए एक तोहफा आपको मिलना। हर कोई चेक करे — परिस्थिति आने पर क्या दिल से आपका शुक्रिया निकलता है, परिस्थिति के लिए और परमात्मा के लिए? हर कोई अपने से चेक करे। और जीवन में कभी भी, किसी को भी आपकी परिस्थिति के लिए जिम्मेवार नहीं समझना, आप आपकी जिम्मेदारी लेना और आप आपके ऊपर काम करते जाना।

हर एक दिन नया दिन है, एक दिन का एक क्षण भी दूसरे दिन के कोई क्षण से समान नहीं होता। इसलिए हर दिन की शुक्रिया दिल से अवश्य करना, आपको एक और २४ घंटे का दिन मिला है परिवर्तन की यात्रा के लिए। समय की वैल्यू उनको होती है जिनके पास समय नहीं रहता है; जैसे किसी को पता है कि कुछ ही दिनों में या कुछ ही महीनों में उसका शरीर छूटने वाला है, उस समय अंदर ही अंदर वह अस्तित्व बहुत दुखी होता है और सोचता है, “काश मेरे पास और थोड़ा समय होता तो मैं ये कर पाता,

काश और थोड़ा समय मिलता तो यह हो जाता।” पर समय गुजरने के बाद उसकी वैल्यू करना, यह कोई समझदारी नहीं है।

इसलिए सभी के पास परिवर्तन के लिए कितना समय है, यह किसी को पता नहीं है। इसलिए जो कुछ करना है, वह अब ही इसी क्षण से कर लो; क्योंकि कल का कोई भरोसा नहीं है। आज के दिन में आप जितना परिवर्तित हो गए, उतना ही परिवर्तित रहोगे। दूसरा दिन आपके नसीब में होगा, तो और आपको आपके अंदर परिवर्तन का एक और मौका मिलेगा। पर कभी कोई यह ना समझे, “हम एक मास में इन-इन बातों में पूरा परिवर्तन करके ही दिखाएंगे।” आप नहीं जानते आपके पास सच में एक मास का समय है भी या नहीं। इसलिए परिवर्तन की यात्रा में सजग रहते अपने परिवर्तन के ऊपर सदैव ध्यान रखना, एक-एक बातों में परिवर्तन करते जाना। आपको आपके अंदर की कमी दिखी, तत्क्षण दिल से दृढ़ संकल्प करना — “यह हमसे मुक्त हो जाए, हम इस संस्कार को पूरा परिवर्तित हो जाएं।” एक-एक परिवर्तन की बात के लिए, एक-एक संकल्प तत्क्षण उठाते जाना, ऐसे नहीं एक साथ ढेर सारे संकल्प उठाए। जब परिस्थिति आती है, उस समय अगर आप दिल से संकल्प उठाते हो, तो वह आपके अंदर से बात मुक्त होने के लिए सहज रास्ता मिल जाता है।

इसलिए सदैव हर परिस्थिति में अपने को सजग रखना, परिस्थिति का शुक्रिया करना और परिस्थिति से सीख लेते आगे बढ़ना कि मुझे अब करना क्या है। बाकी किसी भी प्रकार के इमोशंस आए, वह माया है, उस पर ध्यान नहीं देना। किसी भी प्रकार से विचार आए, उस पर ध्यान नहीं देना। आप आपके परिवर्तन की यात्रा में सीधे रास्ते निकल जाना, तब हर परिस्थिति आपके लिए तोहफा साबित होगी।

सभी परिस्थिति को अपने जीवन में आने के लिए उसका स्वागत करें और दिल से यह संकल्प करें कि, “मुझ आत्मा को परिवर्तित होना है। इसके लिए जो-जो परिस्थिति जरूरी है, वह सारी परिस्थितियां मुझे आत्मा के जीवन में आती जाएं ताकि मैं आत्मा परिवर्तित हो जाऊं।” जिनका स्वयं के लिए संपूर्ण

परिवर्तन का दृढ़ संकल्प रहेगा, उनके जीवन में हर दिन परिस्थिति तोहफे के रूप में आती जाएगी और उनमें परिवर्तन भी आता जाएगा।

सभी अपने आप को चेक करें — आप परिस्थिति को कितना दिल से आपके जीवन में आने के लिए आप तैयार हो? जितना आपकी तैयारी होगी, उतनी-उतनी परिस्थितियां आपके सामने, आप आत्मा के परिवर्तन के लिए आती जाएगी। जितना आपका परिवर्तन के लिए संकल्प होगा, उतना परिस्थितियां आपके जीवन में परिवर्तन के लिए आपके सामने खड़ी हो जाएगी। हर कोई अपनी चेकिंग करे।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः